जीना, मरना, दफ़न होना, जी उठना, आगमन

यह कुछ ऐसा है जिसे हम मानवीय भाषा में कुछ कह नहीं सकते उसे प्रकट करने में असमर्थ हैं, कि हमारे दिल कैसा अनुभव कर रहे हैं, जब हम आज की इस मुबारक और विशेष सुबह यहां जमा हुए हैं। यह सुबह उस सुबह को दर्शाती है जब हमारा धर्म एक वास्तविक सच्चा धर्म बन गया था, क्योंकि यह उस मूल्यवान बालक का समय था जब वह जी उठा था जो की पूरी मानव जाति को छुड़ाने आया था। और आज प्रभु, प्रातः हम उस महान यादगारी की सभा में जमा हुए है, जिसने हमें कब्र, मृत्यु और अधोलोक के ऊपर विजयी बना दिया है। और हम तेरा धन्यवाद देते है, जबकि इतने वर्ष बीत चुके हैं, हम अब भी उसकी उपासना करने के लिए ईस्टर की सुबह को जमा हो पाते हैं, क्योंकि हमारा विश्वास है कि वो फिर से आएगा।

2 और हमारी प्रार्थना है कि तू हमारे सभी पापों और अपराधों को क्षमा कर दे जो हमारे विरुद्ध लिखे गए हैं, क्योंकि हम बड़ी दीनता से अपनी गलतियों को स्वीकार करते हैं, और उसके लहू के द्वारा हमारे पापों के लिए दिए गए बलिदान को ग्रहण करते हैं। प्रभु, हमारे बीच में जो भी बीमारियाँ हैं तू उन्हें दूर कर। जब हम तेरे पवित्र वचन को पढ़ते है तो तू हमारी सहायता कर, तेरा वचन सारे सत्य का आधार है जो तूने हमें दिया है कि हम उसी के द्वारा जीवित रहें और उस पर विश्वास करें।

3 हम न केवल यहां जमा झुंड के लिए प्रार्थना कर रहे हैं, वरन सारी दुनिया में जहां भी लोग आज जमा है, क्योंकि हम बेताब आंखों और हृदय में उससे मिलने की चाह लिए उसके आने की बाट जोह रहे हैं। आज हम अंधेरों में और अव्यवस्था में है, जबकि कोई भी सिरफिरा व्यक्ति, किसी भी बात पर सब कुछ जलाकर सर्वनाश कर सकता है, और केवल एक बटन दबाते ही, सारी दुनिया टुकड़ों में बिखर जाएगी। जैसा कि हमें बहुत से उच्च अधिकारी बताते हैं, कि अगर फिर से विश्व युद्ध छिडा, तो वह बस कुछ ही घंटों का होगा। ओह! जब, आज हम एक और विश्व युद्ध के कगार पर खड़े

हैं। और फिर, यह कलीसिया अत्यंत महिमामय पुनरुत्थान के कगार पर पहुंच चुकी है, क्योंकि हम सोए हुए संतों के संग उठा लिए जाएंगे, ताकि हवा में प्रभु से मिले, और फिर सर्वदा उसी के संग रहे।

4 प्रभु, हम तेरी आराधना करने आए हैं। तू आज से हमें ग्रहण कर ले। तू अपने वचन के पढ़े जाने, गीत भजन गाने, और सुसमाचार प्रचार पर आशीष दे, पश्चाताप करने वालों की प्रार्थना स्वीकार कर ले। बीमारों की प्रार्थना ग्रहण कर, स्वयं की महिमा होने दे, क्योंकि हम इस विनती को नम्रता और दीनता सहित, तेरे पुत्र यीशु के नाम में मांगते हैं। आमीन।

5 आप लोगों को जो पढ़ना चाहते हैं आज सुबह के लिए जो वचन पढ़ने को चुना है, वह बता दूं...

6 और पहले तो कहना चाहता हूं कि—कि हमें खेद है हमारे पास उन्हें बैठाने के लिए काफी जगह नहीं है कि इतने बढ़िया लोगों का यह समूह जो आज सुबह हमारे साथ आराधना में शामिल होने आया है, आप लोग विभिन्न गिरजो और जगहों विभिन्न राज्यों, और यहां तक कि विभिन्न देशों से यहां आए हैं, ताकि यहाँ इस सुबह हमारे इस आराधनालय में, प्रभु की महिमा में उपासना कर सकें।

7 मैं चाहता हूं कि आप पढ़ने के लिए भजन संहिता निकाल ले, भजन संहिता 22। मुझे मालूम है कि ईस्टर की सुबह पढ़ने के लिए यह वचन असामान्य है, मगर परमेश्वर तो खुद भी असाधारण है।

8 और इस सभा के बाद लगभग एक घंटे बाद हम सभा स्थगित कर देंगे, ताकि आप लोग नाश्ता कर सकें। और उसके बाद सन्डे स्कूल सभा साढ़े नौ बजे होगी। और उसके ठीक रविवार की सभा के बाद, यहां बप्तिस्में दिए जाएंगे वहां उस—उस जल कुंड में। तब दोपहर बाद सांझ, या रात छह बजे से शुरू होने वाली चंगाई सभा के लिए, बीमारों के वास्ते प्रार्थना कार्ड जारी किए जाएंगे। अगर आपके यहां कोई बीमार या जरूरतमंद है, तो उसे आज रात सभा में लाना याद रखिएगा, और, थोड़े कुछ—कुछ समय के लिए मैं नहीं हूंगा अंत: फिलहाल यह चंगाई सभा अंतिम होगी। मैं कल सुबह, प्रातः पांच बजे, लॉस एंजेलिस और पश्चिमी तट के लिए निकल जाऊंगा, और उन क्षेत्रों में लगातार कई सभाएं लूंगा।

9 अब भजन संहिता 22 में से, हम पढ़ेंगे।

मेरे परमेश्वर, मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों छोड़ दिया? तू मेरी पुकार से,... व मेरी सहायता करने से क्यों दूर रहता है?

... हे मेरे परमेश्वर, मैं दिन को पुकारता हूं, लेकिन तू उत्तर नहीं देता; और रात को भी, मैं चुप नहीं रहता।

परंतु हे पवित्र, तू जो इजरायल की स्तुति के सिंहासन पर विराजमान है।

तू तो पवित्र है हमारे पुरखा तुझी पर भरोसा रखते थे; वे भरोसा रखते थे और तू उन्हें छुड़ाता था।

उन्होंने तेरी दोहाई दी, और तूने उनको छुड़ाया: वे तुझी पर भरोसा रखते थे, और कभी लज्जित ना हुए।

लेकिन मैं तो कीड़ा हूं, मनुष्य नहीं; मनुष्य में मेरी नामधराई है,... और लोगों में मेरा अपमान होता है।

वे सब जो मुझे देखते है मेरा ठट्ठा करते हैं: और वे होंठ पिचकाते, और *यह कहते हुए, सिर हिलाते हैं,*

उसने परमेश्वर पर भरोसा किया कि वह उसे छुड़ाएगा: उसे ही छुड़ाने दो यही सोचकर वह आनंदित *है।*

मगर तू ही ने मुझे गर्भ में से निकला: जब मैं दूध पिया बच्चा ही था तभी से तूने मुझे भरोसा रखना सिखाया।

मैं जन्मते ही तुझी पर छोड़ दिया गया: तू माता के गर्भ ही से तू मेरा परमेश्वर है।

मुझसे दूर ना हो; क्योंकि संकट निकट है; क्योंकि और कोई सहायक नहीं।

बहुत से सांडो ने मुझे घेर लिया है बाशान के बलवंत सांड मुझे चारो ओर मुझे घेरे हुए है।

वे फाड़ने और गरजने वाले सिंह की नाई, मुझ पर... अपना मुंह पसारे हुए हैं।

मैं जल की नाई बह गया,... और मेरी सब हड्डियों के सब जोड़ उखड गये: मेरा हृदय मोम हो गया; और मेरी देह के भीतर पिघल गया।

और मेरा बल टूट गया और मैं ठीकरा हो गया;... और मेरी जीभ मेरे तालू से चिपक गई; और तू मुझे मार कर धरती की मिट्टी में मिला देता है।

क्योंकि कुत्तो ने मुझे घेर लिया है; कुकर्मियों की मंडली मुझे चारों ओर मुझे घेरे हुए हैं: वे मेरे हाथ और मेरे पांव छेदते हैं।

मैं अपनी सारी हड्डियों को बता सकता हूं: कि वे मुझे देखे वे निहारते हैं।

वे मेरे वस्त्र आपस में बांटते हैं,... और मेरे पहरावे पर चिट्ठी डालते हैं।

... परंतु है यहोवा तू दूर ना रह हे:... मेरे सहायक मेरी सहायता के लिए फुर्ती कर।

मेरे प्राण को तलवार से बचा; मेरे प्राण को कुत्ते के पंजे से बचा ले।

मुझे सिंह के मुंह से बचा: हां जंगली सांडों के सींगो में से तूने मुझे बचा लिया है।

मैं अपने भाइयों के सामने तेरे नाम का प्रचार करूंगा: सभा के बीच में मैं तेरी प्रशंसा करूंगा।

हां... हे यहोवा के डरवइयों, उसकी स्तुति करो; हे याकूब के वंश तुम सब उसकी महिमा करो; और हे इजरायल के वंश, तुम सब उसका भय मानो।

क्योंकि उसने दुखी को तुच्छ नहीं जाना और ना उससे घृणा करता है... और ना उससे अपना मुंह छिपाता है; परंतु जब उसने उसकी दोहाई दी, तो उसने सुना।

बड़ी सभा में मेरा स्तुती करना तेरी ही ओर से होता है: मैं अपने प्रण को उस पर भय रखने वालों के सामने पूरा करूंगा।

नम्र लोग भोजन करके तृप्त होंगे: जो यहोवा के खोजी है वे उसकी स्तुति करेंगे तुम्हारे प्राण सर्वदा जीवित रहे।

संसार के सारे छोर के लोग स्मरण करेंगे और प्रभु की ओर फिरेंगे: और पृथ्वी के सब दूर–दूर के देशों के लोग उसको स्मरण करेंगे और उसकी और फिरेंगे।

क्योंकि राज्य यहोवा ही का है: और सब जातियों पर वो ही प्रभुता करता है।

पृथ्वी के सब हष्ट–पुष्ट लोग भोजन करके दंडवत करेंगे: वे सब जितने मिट्टी में मिल जाते हैं उसको दंडवत करेंगे: वे लोग अपना प्राण खुद बचा नहीं सकते।

एक वंश उसकी सेवा करेगा: दूसरी पीढ़ी से प्रभु का वर्णन किया जाएगा।

वे आयेंगे, और उसके धर्म के कामों को एक वंश पर और जो... *जो उत्पन्न होगा, यह कहकर प्रकट करेंगे कि उसने ऐसे अद्भुत काम* किये।

10 होने पाए प्रभु अपने पढ़े जाने वाले वचन पर उसकी आशीष दे। मैं इस अवसर पर इस सुबह पांच शब्द को चुनता हूं, और उन पांच शब्दों के द्वारा आप उपासकों को आज सुबह यह बताने का यत्न करना चाहता हूं, जो बोझ मेरे मन पर है। मैं इन पांच शब्दों को लेता हूं: *जीना, मरना, दफ़न होना, जी उठना, आगमन।*

11 और मैं सोचता हूं जब कवि ने यह गीत लिखा, तो इन शब्दों के द्वारा बहुत सुंदर ढंग से अपनी बात कही है।

जीते हुए, उसने प्रेम किया; मर कर, मुझे बचाया है;
दफन होकर, मेरे पापों को दूर हटाया है;
जी उठकर, उसने मुझे हमेशा के लिए आजाद किया:
किसी दिन वह फिर से आएगा—ओह, वह शानदार
दिन होगा!

12 कभी कोई भी जीवन यीशु के जीवन समान नहीं हुआ, क्योंकि उसके जन्म लेने के द्वारा परमेश्वर स्वयं देहधारी हुआ था। वो पिता परमेश्वर का प्रगटीकरण था कि उसका पिता वास्तव में क्या है। क्योंकि परमेश्वर वो पिता प्रेम है, तो यीशु प्रेम का संपूर्ण सिद्ध रूप था। वह तो जन्म के समय से ही प्रेम था जब उसके छोटे–छोटे हाथ अपनी मां की गालों पर थपकियां देते थे। वह प्रेम था।

13 और मैं सोचता हूं कि इसी में कुछ लोग सोचने में गलती कर जाते हैं कि वह प्रेम था। "परमेश्वर प्रेम है, और जो प्रेम करते हैं वह परमेश्वर से जन्मे है।"

14 "परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया, यानी, जो प्रेम करने के योग्य ही नहीं थी कि उसने अपना इकलौता पुत्र दिया, ताकि जो कोई भी उस पर विश्वास करें नाश न हो, परंतु अनंत जीवन को पाए।"

15 जब वो यहां धरती पर था उसने अपने प्रेम को तरह–तरह से प्रकट किया था, और यह निर्विवाद सत्य है, कि वह इस धरती पर कभी भी पाया जाने वाला सबसे प्रिय प्राणी था। और मैं सोचता हूं कि उसने अपने जीवन से यहां परमेश्वर को ही जाहिर किया है। और परमेश्वर को प्रकट करने का बस एक ही तरीका है और वह उस प्रेम के जरिये से है।

16 और जब उसने अपने उस समय की एक सबसे बुरी स्त्री को देखा, तो उसने उसके प्रति बड़ा अच्छा व्यवहार किया। उन लोगों ने उसे दोषी पाया था, और उसे दंड देने के सिवा और कोई चारा न था, क्योंकि वह व्यभिचार की दोषी पायी गई थी। और वे लोग उसे खींचकर यीशु के पास लाये, और उससे पूछा, और कहा कि, "तू क्या कहता है कि इसका क्या करना चाहिए? "

17 यीशु ने उस स्त्री की ओर देखकर कहा, "मैं तुझ पर दोष नहीं लगाता। चली जा और फिर पाप न करना।" इसके बजाये कि उसे सड़क पर पत्थरवाह करने को छोड़ देता, कि भेडियों की तरह झुंड उस पर टूट पड़ता, और उसे पत्थरवाह करके उसके प्राण लेता; उसका कोमल, दयावान, हृदय स्वयं उस स्त्री के पापों को अपने ऊपर अनुभव करके उनमें डूब गया, कहा, "मैं इस स्त्री पर दोष नहीं लगाता। बस तू जा और फिर पाप ना करना।"

18 और जब वो लाजर की कब्र पर जा रहा था, मैं सोचता हूं कि वह एक और महान घटना थी जिसमें यीशु ने यह दिखाया कि परमेश्वर मानव जाति के लिए क्या है। न केवल वह एक परमेश्वर है जो बड़े से बड़े पाप को भी क्षमा कर सकता है, और एक पापी को अपने क्षमादान करने वाले प्रेम के द्वारा, पाप रहित बना सकता है, वरन जब मृत्यु हमें ख़ामोशी में सुला देती है, तब भी वह हमारी परवाह करता है। मैं सोचता हूं कि उसने मार्था और मरियम के साथ इस बात को अच्छी तरह से प्रकट किया था, जब वो उस घर में पहुंचा जहां मौत ने एक प्यारे से व्यक्ति के जीवन को कैद कर लिया था। और कब्र पर मार्ग में जाते हुए, परमेश्वर होने के नाते, उसे पता था कि वह लाजर को मुर्दों में से जिला उठायेगा, वह जानता था कि

परमेश्वर ने उससे कहा है कि उसके वचन में ही कब्र से उसे जिला उठाने की सामर्थ थी; इस पर भी, जब उसने मार्था, मरियम और अन्य लोगों को देखा जो लाजर के प्रेम में थे, और रो रहे थे, तो पवित्र शास्त्र बताता है कि वो रोया। यह क्या था? यह उसका महान प्रेम भरा हृदय था! जब उसने देखा कि उसके—उसके मित्र यह मनुष्य कष्ट में है, तो वह भी उनके संग दुखी हो गया।

19 मुझे यह जानकर बहुत खुशी हुई है कि वह टूटे हुए दिलों में मिलता है। जब हम गंभीर हालत में होते है, तो वह हमें छोड़ता नहीं। वह तब भी हमारे पक्ष में खड़ा होता है, जब सारे प्रयत्न असफल हो जाते हैं और दुनियावी चेष्टाओं की अंतिम आशा भी खत्म हो जाती है, वो तब भी परमेश्वर है और हमें प्रेम करता है। वह परमेश्वर का प्रकटीकरण था।

20 और, ओह, मैं एकदम यकीन करता हूं कि वह चाहता है कि उसके लोग पवित्र आत्मा से इस तरह अभिषिक्त हो, कि हम परीक्षा में कष्ट के समय एक दूसरे के काम आ सके, और अपने द्वारा परमेश्वर की सहानुभूति प्रकट कर सकें, जैसा कि वह उन हृदय से उंडेली जाती है जो उसके आत्मा से जन्मे है, ताकि कलीसिया में जीवते परमेश्वर का प्रेम प्रतिबिंबित किया जा सके। कवि ने इस बात को बड़ी अच्छी तरह से कहा है, "जीवित रहते, उसने मुझसे प्रेम किया!"

21 जिस प्रकार से परमेश्वर ने यीशु मसीह में स्वयं को दर्शाया, तो उसने यही बताया कि संपूर्ण मानव जाति के लिए उसने क्या किया है। परमेश्वर ने अपनी मंशा मानव जाति को बताई, यही कि वे उन्हें क्षमा करें, और जो अप्रिय है उन्हें प्रेम करें। और मुझे संदेह है, कि आज ईस्टर की सुबह, हमारे अंदर यही कमी है। हम उनसे प्रेम कर सकते हैं जो हमसे प्रेम करते हैं, मगर उसने उनसे प्रेम किया जो उसे प्रेम नहीं करते थे।

22 वह प्रेम का पहला प्रतिनिधित्व करने वाला था, जो इस धरती पर प्रेम को लाया; और उन्हीं के द्वारा वह तिरस्कृत किया गया जो धरती पर थे, और जिन्हें उसने प्रेम किया। कोई मनुष्य उसके सामान प्रेम नहीं कर सका; और इतनी नफरत किसी से नहीं करी गई जितनी उससे। उन लोगों ने उससे नफरत करी उसे तुच्छ जाना, और उसे तिरस्कृत किया, मगर इससे उसका प्रेम रुका नहीं। अंत, जब वो सलीब पर टंगा था तो लोगों ने हंसी उड़ाई, वह जीवन जो उसने धरती पर गुजारा था, उसमें उसने

भलाई और भले कामों को छोड़ और कुछ ना किया था, पापियों को क्षमा करना, रोगियों को चंगा करना, और अन्य भले काम ही उसने किए थे। जब उसे... वस्त्र विहीन करके सलीब पर लटकाया गया, और संग खड़े लोग चिल्ला रहे थे, उसका मखौल उड़ा रहे थे, उस पर थूक रहे थे, तो लटके हुए अपने पवित्र मुख से उसने पुकार कर कहा, उसका हृदय प्रेम से भरा था, "हे पिता इन्हें क्षमा कर, क्योंकि यह नहीं जानते कि क्या करते हैं।"

23 वह सब कुछ समझता था। परमेश्वर होने के नाते, वह सब कुछ जान सकता था। यही कारण है कि वह हमें तब भी प्रेम करता है जब हम प्रेम करने योग्य नहीं होते क्योंकि वह परमेश्वर है और सब कुछ समझता है। "जीवित रहकर, उसने मुझसे प्रेम किया।" उसकी तरह का कोई जीवन कभी भी धरती पर नहीं हुआ, क्योंकि उसका पूरा जीवन प्रेम में लिपटा हुआ था।

24 "मरकर, उसने मुझे बचा लिया।" जब बाग ए अदन में, यहोवा परमेश्वर की मांग, उस पाप की सजा मृत्यु देनी थी, और इस दंड में कोई परिवर्तन नहीं किया जा सकता था। और सिवाये और कोई चारा नहीं था। क्योंकि, परमेश्वर सर्वोत्तम है, और वह अनंत है, धरती और आकाश का न्यायी है। पाप का दंड मृत्यु है, और वहां कोई नहीं था जो दूसरे के लिए इस दंड को चुका सकता। क्योंकि चाहे कोई मनुष्य, किसी दूसरे के लिए अपने प्राण भी दे, तो भी वह जन्म से पापी ही है। हम में से कोई भी एक दूसरे की सहायता नहीं कर सकता था, क्योंकि हम सभी दोषी थे। "हम पापों में जन्मे अधर्म में पाले गए, और झूठ बोलते हुए इस संसार में आए।" और आशा की एक किरण भी कहीं नहीं थी। परमेश्वर ने हम पर मृत्यु दंड की आज्ञा दी थी, और धरती का हर एक प्राणी जो कभी भी धरती पर रहा है वह इसी दंड के आधीन था। धार्मिक मनुष्य पैदा हो सकते थे और बड़ी भलाई के काम कर सकते थे, मगर जन्म से सभी पापी थे।

25 इस सजा को चुकाने का बस एक ही तरीका था, और वह था कि परमेश्वर खुद मरे। परमेश्वर तो आत्मा है, वह मर नहीं सकता, मगर वो देह में होकर धरती पर उतर आया और खुद को प्रेम भरे जीवन के द्वारा जाहिर किया; ताकि अपनी सारी भलाई लेकर, और अपनी इच्छा से वह एक सर्वोत्तम बलिदान दे सके, ताकि वे दोषियों के दोष अपने ऊपर ले

सके। हम सब तो पापी थे, और दुनिया में हमारे उद्धार पाने का और कोई तरीका नहीं था। वह धरती पर न केवल इसलिए आया कि पहचाना जाए, वरन वह अपना बलिदान देने के लिए आया।

26 हाबिल ने यही दर्शाया था कि जब उसने कैन से उत्तम बलिदान परमेश्वर को चढ़ाया; जब वह एक छोटे मेमने की गर्दन पर, अंगूरों की लता लपेटे, उसे चट्टान पर लेकर आया। उसने उस छोटे बच्चे को चट्टान पर लिटाया, उसकी ठुड्डी पीछे को उठाई और एक—एक पत्थर के टुकड़े में से उसकी गर्दन तराशती; और वह तड़प–तड़प कर और मरने लगा, उसका लहू बह चला, और वह सफेद चट्टान लहूलुहान हो गई। हाबिल ने ऐसा करके वहां सलीब की प्रतिछाया पेश करी थी।

27 जब परमेश्वर का वह मेमना जो जगत की उत्पत्ति से घात किया गया था, पापियों के बदले कुर्बान होने आया, तो उसे मसला गया और मारा कुचला गया, और—और उसका हंसी और ठट्ठा किया गया, और वह मृत्यु से मारा गया जो परमेश्वर को छोड़ और कोई उस मृत्यु का वर्णन नहीं कर सकता था, और उसके बाल लहू से तर थे लहू की बूंदे धरती पर गिर रही थी, वह दिखा रहा था कि पाप कितना भयंकर होता है, जब उसे पाप के जीवन से मनुष्य का उद्धार करने के लिए मरना पड़ा। तो उसकी सी मृत्यु कोई और नहीं ले सकता था। उस मौत के सामने कोई ठहर नहीं सकता था। ऐसा कहा गया है कि, "जब उन्होंने उसकी पसली में भाला मारा, तो लहू और जल की धारा बह निकली।"

28 कुछ समय गुजरा है, जब कभी मैं इस विषय पर किसी से बातचीत कर रहा था। और वो एक वैज्ञानिक था जिसने कहा था, "केवल एक कारण से ऐसा हो सकता है। कि वह मरा, उसकी मौत का कारण वो रोमी भाला नहीं था; और ना ही खून का बह जाना था, जिससे वो मरा, क्योंकि उसके शरीर में तो खून तब भी था। वह जिससे मरा, वह रोमन भाला नहीं था और ना ही वह किलें थी जो उसके हाथों में ठोकी गई थी, या वो कंटीला ताज जो उन्होंने उसके सिर पर रखा था। लेकिन वरण... वो दुःख और पीड़ा से मरा था, क्योंकि वह अपनों के लिए आया और उसके अपनों ने उसे ग्रहण न किया। वो दिल टूटने से दुखी होकर मरा था। जबकि, वह क्योंकि जानता था उसने देखा कि उस समय के जिन लोगों का छुड़ाने वह

जान देगा, वही उस पर थूक रहे थे, और मनुष्य ने उसे अस्वीकार कर दिया था।"

29 आठ साल साल पहले दाऊद ने वैसे ही पुकारा, और कहा था जैसे यीशु ने कलवरी क्रूस से चिल्ला कर कहा, "हे मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों छोड़ दिया? "

30 पाप का परिणाम कितना भयानक होता है, वह मनुष्य को परमेश्वर से अलग कर देता है! और वो पाप बली बन गया जो हमारे पापों के लिए दी जानी थी। और वो परमेश्वर की सहभागिता से अलग कर दिया गया था। पाप ने उसे अलग कर दिया था। परमेश्वर ने हमारे पाप उसके ऊपर रख दिए थे, और वह परमेश्वर से अलग कर दिया गया था, और यही वजह थी कि वह पुकार उठा था, "हे मेरे परमेश्वर तूने मुझे क्यों छोड़ दिया? " और क्योंकि उसे छोड़ दिया गया था और उसने हमारी जगह ले ली थी, उसने देख लिया था, कि उसके उन्हीं लोगों ने उसे अस्वीकार कर दिया था, जिनके लिए अपना प्राण देने और उद्धारकर्ता बनने वह आया था, और इससे उसे इतना अधिक दुख पहुंचा, इसलिए, उसका हृदय इतना अधिक टूट गया कि उसके शरीर के रसायन, वो लहू और वो जल अलग–अलग हो गए।

31 मनुष्य कभी नहीं जान पाएगा कि वह क्या था। यही वजह है कि कोई इस प्रकार की मृत्यु से कभी नहीं मर सकता। चाहे आपको कितना भी सता–सता कर मारा जाए, मुझे परवाह नहीं चाहे कितना ही लोग किसी को कितना भी, इंच–इंच करके चीर दे, या टुकड़ों में जलाये; आप उस तरह की मौत से नहीं मर सकते, क्योंकि आपका हिसाब किताब वैसा नहीं है। उसे तो परमेश्वर ही होना चाहिए था। उसे एक मनुष्य से अधिक होना ही चाहिए था। और सोचिए, कि, परमेश्वर ने जान दी। वह दुनिया के प्रति दुख से भरकर, टूटे हृदय सहित मरा, और आखिर में उसकी देह में एक रासायनिक प्रतिक्रिया शुरू हुई जो आपकी देह में नहीं हो सकती थी। आप इस तरह से पीड़ित नहीं हो सकते। कोई तरीका या संभावना नहीं है कि आप उसकी तरह से दुःख उठा सके। अंत: केवल एक ही था जो ऐसा कर सकता था, और उसने वैसा किया।

32 वहां सलीब पर वह अमूल्य जीवन टंगा था, जो भले कामों को करने व प्रेम करने के सिवा कुछ भी नहीं जानता था, वह आकाश वह पृथ्वी के बीच

टंगा था, उसे वहां नग्न अवस्था में, अपमानित रीति से हवा में टांगा गया। अगर आपको सबके सामने नंगा करके खड़ा कर दिया जाए, तो सोचिये; आप समझ ही नहीं पाएंगे कि परमेश्वर के लिए यह कैसा बड़ा अपमान था, वह वहां टंगा था। मैं जानता हूं कि सलीब और उसके चारों ओर लोगों की भीड़ बहुत छोटी सी बात थी, और ऐसा करके लोगों ने उसे मौत नहीं दी। यह सब तो हमारी कल्पना में इसलिए आता है, कि चित्रकार ने वैसा चित्रित किया है। उन्होंने उसके वस्त्र उतारे। उसका चोला था, और जिसे उन्होंने फाड़ डाला और उस पर चिट्ठी डाली। उसका अत्याधिक अपमान किया गया। क्योंकि वह परमेश्वर था, वो फिर भी स्थिर खड़ा रहा, और पापी लोग उसके मुंह पर थूकते रहे। मगर, इस पर भी क्योंकि वह—वह करुणा का अथाह सागर था, उसे लोगों के सामने, नग्न अवस्था में मरना था। उसके ऊपर इन सब बातों का ऐसा असर हुआ, कि उसके शरीर का लहू और पानी अलग–अलग हो गए। कोई आश्चर्य नहीं... मैं सोचता हूं कि कवि ने इन पंक्तियों में इसका बहुत अच्छा वर्णन किया है:

चट्टानों के बीच और अंधियारे आकाश के तले,
मेरे उद्धारकर्ता ने सिर झुका कर और प्राण दे दिए;
लेकिन मंदिर के परदे के फट जाने से वह पथ प्रकट हुआ
जो स्वर्गीय आनंद व अनंत काल में ले जाता है

33 यकीनन, उसे ऐसा ही करना था। वह पर्दा मनुष्य और परमेश्वर के मध्य टंगा था, और उसके हट जाने और स्वर्गीय आनंद पाने और कभी समाप्त न होने वाले दिन में जाने का मार्ग खुल गया। कलवरी का अर्थ महत्वपूर्ण है हम उसकी व्याख्या नहीं कर सकते। यकीनन।

जीते हुए, उसने मुझसे प्रेम किया; मरकर, उसने मुझे बचाया;
दफन होकर, उसने मेरे पापों को मुझसे दूर किया।

34 अब उसे दंड मिल चुका है। पाप का अब कुछ अधिकार हम पर बाकी नहीं रहा। जब उसने सलीब से पुकारकर कहा, "यह पूरा हुआ," पाप मर गया! आज भी मरा हुआ है। उसका काम तमाम हो चुका है। वह शक्तिहीन है। जीवन रहित है। भाइयों, इस बात पर सोचे। कि वो पाप, मनुष्य का शत्रु अब मृत और जीवन विहीन है, अब उसका कुछ भी प्रभाव नहीं है। वह

अब कुछ भी नहीं कर सकता। कोई आश्चर्य नहीं जब सूर्य ने प्रकाश देना बंद किया, सितारे नहीं चमक सके, धरती पर अंधेरा छा गया, उस समय उन सब को छुड़ाया गया था।

35 अब वह पाप मृत है, उसे दफन किया जा चुका है, वह जीवन रहित है। क्योंकि उसमें जीवन नहीं, अत: उसे दफन करना चाहिए। क्या था जो दफन किया गया? परमेश्वर की देह को दफन किया गया, क्योंकि वह पाप बली था। वह आग में भस्म किया मेमना था, जिसे हमारे अधर्म की आग में भूना गया। उस पाप रहित मेमने को जिसने पाप को जाना तक नहीं था, जैसे कि परमेश्वर किसी बुराई को नहीं जानता; उसका जीवन दिया गया था, और वह पाप बली के रूप में सलीब पर टंगा है। "दफन होकर, उसने मेरे पापो को मुझसे दूर किया है।" उसे दफन होना ही चाहिए। वह देह, जो पापबली के लिए थी उसे दफन ही होना चाहिए।

36 यही कारण है कि कुछ क्षण बाद, बहुत से लोग एक–एक करके इस जल कुंड पर आएंगे, कि यीशु मसीह के नाम में बपतिस्मा ले। क्यों? कुछ खास बात हुई है। उस पवित्र आत्मा ने जो यीशु की देह से बाहर आया, और जब उसने पुकार कर कहा, "यह पूरा हुआ," उसने पाप को हमारी देह में मार दिया है। और हमें पाप को दफन करना है, उसे फिर कभी याद नहीं करना है। मुझे बहुत खुशी है कि ऐसा हुआ है।

37 जब कोई चीज दफन करी जाती है, तो वह आंखों से छिप जाती है, दृष्टि से ओझल हो जाती है। "और दफन होकर, उसने मेरे पापो को मुझसे दूर किया।" अब परमेश्वर हमारे पापो को नहीं देख सकता, क्योंकि उन्हें दफन किया जा चुका है। उन्हें कहाँ दफन किया गया है? भूल जाने वाले समुद्र में। भूल जाने वाले समुद्र के बारे में सोचिए! परमेश्वर अब हमारे पापो को याद नहीं कर सकता, क्योंकि वह मृत है और दफन कर दिए गए हैं। उन्हें अब याद तक नहीं किया जा सकता। वे परमेश्वर की स्मृति और याद से पर चले गए हैं।

38 वह खुद भी... इस "दफ़न" में शामिल था उसने पुराने नियम में इसका प्रतिनिधित्व किया। उनके पास दो... पवित्र वेदी पर वे पाप बली चढ़ाया करते थे। और उसके लिए वह दो बकरे लिया करते थे, एक बकरे को बली किया जाता था; और दूसरे बकरे के ऊपर वे पाप जो उस मृत बकरे के ऊपर रखे गए थे, रख दिए जाते थे।

39 याद रखिये, यीशु एक भेड़ था। वो एक मेम्ना था, मगर पाप बली के लिए वह बकरे का प्रतीक था। वह धार्मिकता था क्योंकि वह परमेश्वर था, भेड था। मगर वो पापबली यानी बकरा बन कर आया, ताकि वह मेरे और आपके लिए पाप बलि दे सके; भेड़ से बकरे में परिवर्तित हुआ।

40 यीशु उन दोनों ही बकरों के द्वारा प्रकट किया जाता था, वे यीशु का प्रतीक थे, प्रतिछाया थे: एक के रूप में वह—वह बलिदान किया गया जो हमारे लिए प्रायश्चित ठहरा; दूसरे के रूप में, प्रायश्चित के सारे पाप उस पर लादे गए, और दूसरा बकरा सारे पाप को उठाये जंगल में दूर चला जाता था, ताकि लोगों के पापों को उठाये। यह किस बात का प्रतीक था? यह हमारे प्रभु यीशु की उसके दफन होने की प्रतिछाया थी। "मरते हुए... जीते हुए, उसने मुझसे प्रेम किया। मरकर, उसने मुझे बचाया। दफन होकर, वह मेरे पापा को दूर ले गया।" उसने हम लोगों के पापों को स्वयं अपने ऊपर ले लिया, और उन्हें लेकर वह निचले स्थान में अधोलोक में उतर गया। वह पाप बली था। उसके ऊपर लोगों के पाप थे। वो उनके लिए मारा गया था। उसके ऊपर हमारे पाप लाद दिए गए थे, और वह उन्हें लेकर दूर चला गया था, इतनी दूर कि परमेश्वर अब उन पापों को कभी याद भी नहीं करेगा। इस बारे में सोचिए! ओह, तो ऐसे उद्धारकर्ता के लिए तो कलीसिया पुकार सकती है, "हाल्लेलुय्या ऐसे उद्धारकर्ता के लिए!"

41 न केवल हमारे पाप क्षमा किए गए हैं, वरन उन्हें भूल जाने वाले समुद्र में दफन कर दिया गया है, ताकि वह कभी याद ना किये जाए। "दफन होकर, उसने हमारे पापों को हमसे दूर कर दिया है।" उन्हें अब याद नहीं किया जा सकता, क्योंकि वे अब नहीं रहे। वे अब परमेश्वर की दृष्टि से परे हैं। वे पाप अब खत्म हुए। उनसे हमारा तलाक हो चुका है। उन्हें अलग कर दिया गया है। परमेश्वर अब उन पापों को याद नहीं करता। क्या? इस कलीसिया को आज सुबह यह जानकर खुशी मनानी चाहिए, कि आप हमारे पापों को कभी भी याद नहीं किया जाएगा। उन्हें भूल जाने वाले समुद्र में डाल दिया गया है, उन्हें कब्र में दफना दिया गया है जहां से वे कभी भी बाहर नहीं आ पाएंगे। वे हमेशा के लिए मृत है वे भुलाये जा चुके है। और वे अब ऐसे है मानो हमने कभी पाप किये ही नहीं थे। "मरकर, उसने मेरा उद्धार किया।" मगर, "दफन होकर, उसने मेरे पापों को मुझसे दूर किया है।" वह उन्हें इतनी दूर ले गया इतना तक कि वे भूल जाने वाले समुंद्र में डाल दिए गये है। ओह! हम जानते है कि निश्चित रूप से हम इन बातों पर विश्वास करते

है, और यह सारी बातें यकीनन सच है। यह परमेश्वर की सत्य बातें हैं। वे सारी महान बातें मानव के लिए कह पाना उसके वश के बाहर है। इन सारी बातों के लिए हम कभी भी अपनी कृतज्ञता पूरी तरह जाहिर नहीं कर सकते हैं।

42 मगर, ओह, वो ईस्टर! "जी उठकर, उसने हमेशा के लिए हमें स्वतंत्र व न्याय उचित ठहरा दिया है।"

जीते हुए, उसने मुझसे प्रेम किया; मर कर, मुझे बचाया;
दफन होकर, उसने मेरे पापों को मुझसे दूर किया; (यह ठीक बात है।)
मगर, जी उठकर, उसने मुझे न्याय उचित ठहराया।

43 जी उठना क्या था? वह परमेश्वर की ओर से दी गई रसीद है, कि बिल का भुगतान कर दिया गया है। "जी उठकर, उसने हमेशा के लिए स्वतंत्र न्याय उचित ठहरा दिया है।" ओह, जी उठने वाला, कैसा महान उद्धारकर्ता है! परमेश्वर ने क्या किया था? एक मनुष्य दुख उठा सकता है, मर सकता है, एक मनुष्य दफन हो सकता है। लेकिन ईस्टर इन सबमें महान है, क्योंकि यह परमेश्वर की ओर से पुष्टि या अनुमोदन है, "कि मेरी व्यवस्था पूरी हो गई है, मेरी मांग पूरी हो गई है, उसे यीशु ने पूरा कर दिया है!" उसने उसे मुर्दों में से फिर से जीवित किया है! "जी उठकर, उसने हमेशा के लिए स्वतंत्र न्याय उचित ठहराया है।" उसका पवित्र नाम धन्य हो!

44 इसमें कुछ भी आश्चर्य नहीं किया हमारे अंदर संवेदना जगाता है! कोई ताज्जुब नहीं कि मानवीय मन इसे अपने अंदर समा नहीं सकता! ओह, अब हम अपने विजयी विश्वास के द्वारा स्थिर अधिक खड़े रहकर यह कह सकते हैं कि, "हमें हमेशा के लिए स्वतंत्र और न्याय उचित ठहरा दिया गया है," क्योंकि वो मर गया था दफन हुआ था, और परमेश्वर ने ईस्टर की प्रातः उसे फिर से जिला उठाया है। परमेश्वर ने यही दिखाया है कि उसने जो कुछ किया, जिसे परमेश्वर ने ग्रहण कर लिया है। सब कुछ मुफ्त में कर दिया है, अब आप स्वतंत्र हैं! "जी उठकर, उसने मुफ्त में हमेशा के लिए न्याय उचित ठहरा दिया है।" ओह, कोई भी कभी भी इसके बारे में सोच नहीं सकता, कि वह दिन कितना महान था जब वह जी उठा था! और

स्वर्गदूतों ने इसे देखा। स्वर्गो के स्वर्ग से, स्वर्गदूतों ने परमेश्वर की स्तुति के गीत गाए, और आनंद मनाया; जब पुराने नियम के संत, स्वर्ग में आनंद मनाया गया, "हाल्लेलुय्या!" "जी उठकर, उसने हमें न्याय उचित ठहरा दिया।" स्वर्ग हिल गया, पृथ्वी हिल गई, आकाश हिल गए, अधोलोक हिल गये, जब वो बड़ा गर्जन का शब्द गुंज उठा। जब कब्र के ऊपर से वो जीवित हो गया! "जी उठकर, उसने हमेशा के लिए स्वतंत्र रूप से न्याय उचित ठहरा दिया।" ओह, प्रभु!

45 तब जो लोग उसमें मरे हैं वह यही गीत गा सकते हैं, हम उसके अद्भुत अनुग्रह से ऐसा कर सकते हैं, उस ओर, जो उसने किया। देखा? परमेश्वर का मोहर किया गया अनुमोदन! "थोड़ी देर में यह दुनिया मुझे फिर ना देखेगी, फिर भी तुम मुझे देखोगे, क्योंकि मैं मुर्दों में से जी उठूँगा और तुम्हारे संग रहूंगा, वरन जगत के अंत तक तुम्हारे अंदर रहूंगा; पुष्टि स्वरूप, और एक प्रमाण बनकर ऐसा करेगा कि जो परमेश्वर ने कहा है वह सत्य है, और जो मैं कहता हूं सत्य है," यीशु कह रहा है। "मैं पवित्र आत्मा के रूप में तुम्हारे पास आऊंगा। मैं तुम्हारे अंदर वास करूंगा, और हमेशा के लिए तुम्हारे साथ रहूंगा।" ऐसा है तभी तो वह संत इस गीत को गा सकते हैं, जिनके हृदय में पुनरुत्थान की आशा है:

> वह चमकदार साफ आकाश वाली सुबह आएगी जब मसीह में मरे लोग फिर से जीवित हो जाएंगे,
> और वे यीशु के जी उठने की महिमा के भागीदार होंगे;
> जब उसके चुने लोग अपने स्वर्गीय घर को जाने के लिए एकत्रित किए जाएंगे, (इसका पक्का वादा है, परमेश्वर के द्वारा स्वयं लिखित वादा है, इस पर परमेश्वर की छाप लगी है,)
> जब ऊपर स्वर्ग पर, नाम पुकारे जाएंगे, मैं वहां मौजूद होऊंगा। (ओह, जल्दी आ जाओ!)

ओह, कोई आश्चर्य नहीं उन्होंने कहा:

> जी कर, उसने मुझसे प्रेम किया; मर कर, उसने मुझे बचाया;

दफन होकर, उसने मेरे पापों को दूर हटाया; (ओह!)
जी उठकर, उसने सेंत–मेंत हमेशा के लिए न्याय
उचित ठहराया।

46 पापों को क्षमा किया गया है। ये दूसरे बलिदान दंत कथाएं बनकर, सारे बेकार साबित हो सकते थे। मगर इस ईस्टर की सुबह पर, जब वो जी उठा, तो परमेश्वर ने प्रमाणित कर दिया है कि उसने इसे ग्रहण कर लिया है। मैं आश्चर्यचकित हूं, इस पर सोचते ही दिल से हाल्लेलुय्या निकल पड़ता है! कोई संदेह नहीं कि इससे मनुष्य मौत के सामने भी स्थिर खड़ा रह सकता है! इससे लोग उन बातों पर भी यकीन कर पाते हैं, जो नहीं दिखाई देती मगर ऐसा लगता है, कि वह दिखाई दे रही है! क्या बात है? "जी उठकर, उसने हमें न्याय उचित ठहरा दिया है।" आप कैसे जान पाते है कि वो जी उठा है? क्योंकि, क्योंकि, वह हमारे दिलों में जी उठा है, हमेशा के लिए स्वतंत्र रूप से धर्मी ठहरा दिया है!

47 चालीस दिन के बाद, जब वह वहां खड़ा अपने बच्चों से बातें कर रहा था, तो पृथ्वी की आकर्षण शक्ति उसके लिए मंद हो गई। उसका काम पूरा हो गया था। दंड का भुगतान किया जा चुका था। उसकी रसीद उसके हाथों में थी। जो कि परमेश्वर की रसीद थी। उसके बच्चे, उसकी कलीसिया, उसके विश्वासी थे। पाप पर विजय हो चुकी थी। आगे का मार्ग साफ कर दिया गया था। अब वह धरती पर और नहीं रुक सकता था। हमें क्या चीज यहां रोक सकती है? वह आकर्षण शक्ति है। आकर्षण शक्ति क्यों टूटने लगी थी, उसका पंजा ढीला होने लगा था। क्यों? इसलिए की यीशु का सारा काम पूरा हो चुका था। फिर क्या हुआ? वह धरती से ऊपर उठने लगा।

48 "सारी दुनिया में जाकर, और सारे लोगों को सुसमाचार प्रचार करो," उसके होंठों से आवाज आई। "सारे जगत में सारे प्राणियों को जाकर सुसमाचार सुनाओ। जो विश्वास करें और बप्तिस्मा ले उसका उद्धार होगा, मगर जो विश्वास नहीं करेगा वह दोषी ठहर चुका। और विश्वास करने वालों में यह चिन्ह होंगे। मेरे नाम से वे दुष्ट आत्माओं को निकाल देंगे। वे अन्य भाषायें बोलेंगे। अगर वे सांपो को उठा ले और विषेली वस्तु भी पी जाए, तो उन्हें कुछ हानि ना होगी। वे बीमारों पर हाथ रखेंगे और चंगे हो जाएंगे। क्योंकि मैं जीवता हूं... अब आकर्षण शक्ति मेरे लिए खत्म हो गई है। अब

पापों का कोई बंधन नहीं है। मैंने तुम्हारे लिए अपने प्राण दिए हैं। परमेश्वर ने इसे प्रमाणित किया है, और जी उठाकर यीशु की उनकी पुष्टि कर दी है। और क्योंकि मैं जीवता हूं, इसलिए तुम भी जीवित रहोगे! एक दिन में फिर से आऊंगा।"

49 "किसी दिन वो फिर से आ रहा है, ओह, कैसा शानदार दिन होगा!" तब, क्या? जीना, मरना, दफन होना, जी उठना, फिर से आना, यही आज की कलीसिया की आशा है!

जी कर, उसने मुझसे प्रेम किया; मर कर, मुझे बचाया;
दफन होकर, उसने मेरे पापों को दूर हटाया;
जी उठकर, उसने सेंत–मेंत हमेशा के लिए न्याय उचित ठहराया;
किसी दिन वो आ रहा है—ओह, वो कैसा महिमामय दिन होगा!

यह क्या था? यीशु के नाम में पांच वर्ण है, जे–ई–एस–यू–एस।

जी कर, उसने मुझे प्रेम किया; मर कर, उसने मुझे बचाया;
दफन होकर, उसने मेरे पापों को दूर हटाया।
जी उठकर, उसने सेंत–मेंत हमेशा के लिए न्याय उचित ठहराया;
किसी दिन वो आ रहा है—ओह, कैसा महिमामय दिन होगा!

50 हम उसके दोबारा आने की आशा कर रहे हैं!

और किसी चमकदार सुबह जब आकाश बादलों से साफ होगा जब मसीह में मरे लोग जी उठेंगे,
और मसीह के जी उठने की महिमा में भागीदार बनेंगे;
उसके चुने लोग ऊपर आकाश में जमा होंगे कि अपने स्वर्गीय घर को जाएं,
जब ऊपर स्वर्ग में नाम पुकारे जाएंगे, मैं वहां होऊंगा।

क्यों? मेरे पास रसीद है। वो जी उठा है! आपको कैसे मालूम? वह मेरे हृदय में रह रहा है। वह अपने विश्वास करने वाली कलीसिया के हृदय में रह रहा है।

51 मित्रों, इस बात पर सोच विचार करो। जल कुंड गर्म जल से भरा थोड़े से क्षणों में तैयार रहेगा, कि बप्तिस्में दिए जा सके, जबकि बस कुछ ही समय बाद, हम यह रस्म अदा करने वाले है।

आइये कुछ क्षणों के लिए अब प्रार्थना में अपने सिरों को झुकाये।

52 मैं सोचता हूं कि आज हमारे मध्य में ऐसा कोई मनुष्य, या अनेक मनुष्य शायद ही हो जो अब भी यीशु के महान बलिदान को महत्व न दे और उसे ग्रहण न करें, आप चाहेंगे कि आपको प्रार्थना में याद रखा जाए, कि परमेश्वर ने आश्चर्यजनक रूप से आपके दिल से बातें करी है, और आप उसकी कुर्बानी को अपने लिए ग्रहण करेंगे, और आपके प्राण को वो साफ करेगा।

53 और याद रखिये कि हम आज इस ईस्टर को केवल नए वस्त्र और नए टोप पहनने के रूप में ही नहीं मना रहे हैं; ऐसा करना अच्छा है, यह कुछ नया होने का प्रतीक चिन्ह है। कि परमेश्वर ने कुछ नया किया है। यह ठीक है। मगर यही केवल सब कुछ नहीं है। ईस्टर का इस तरह का यह मतलब नहीं है। या, ईस्टर खरगोश या खरगोश के अंडे का शिकार करना, और छोटे सफेद मुर्गियां, और आदि–आदि, यह बात नहीं है, भाई।

54 ईस्टर एक विजय है, एक जीत है जो परमेश्वर ने इस धरती पर पाई है, कि उसने अपने बेटे को मुर्दों में से फिर से जिला उठाया है। "कि और जो कोई उस पर विश्वास करता है, वह नाश न होगा, बल्कि अनंत जीवन पाएगा।"

55 यह पुनरुत्थान आपके जीवन में भी हो सकता है। अगर ये अभी तक आपके जीवन में नहीं हुआ है, तो आज प्रातः, जबकि आप अपने सिर प्रार्थना में झुकाए हुए हैं, आप कहेंगे कि, "परमेश्वर, मुझे याद रखिए, और वह जीवंत जीवन, काश मेरे हृदय में भी आ जाए।" क्या अपना हाथ उठाकर और कहेंगे, "भाई ब्रंहम, मेरे लिए भी प्रार्थना करिए, जैसे मैं अपने हाथ को उठाता हूं"? प्रभु आपको आशीष दे। प्रभु आपको आशीष दे। क्या कोई और चाहता है कि वह अपना हाथ उठाये, और कहे, "भाई, मेरे लिए प्रार्थना करें, मैं चाहता हूं कि इस जीवंत हुए फिर से जी उठे जीवन को पाऊं"?

उस उज्वल और बादल रहित सुबह पर...

अब इस पर सोचे जबकि हम... ? ...

... मसीह जी उठेगा,
और उसके पुनरुत्थान की महिमा सहभागी होती है;
जब चुने हुए लोग दूसरे किनारे पर एकत्र होंगे,
जब उस ओर वहां पर पुकारा जाता है, तो मैं वहां पर होऊंगा।

जब वहां उस ओर पुकारा जाता है,
जब उस ओर से पुकारा जाता है,
अब यदि आप निश्चित नहीं है, तो अभी इसे ठीक कर ले।

... उस ओर पुकारा जाता,
जब उस ओर वहां पर पुकारा जाता है, तो मैं वहां पर होऊंगा।

आइए हम स्वामी के लिए परिश्रम करें... (यह आप संतों के लिए है।)... सूर्य,
आइए बात करें...

56 अब, आप जो मसीही लोग हैं, क्या परमेश्वर से वायदा करेंगे कि आप उसकी सेवा के लिए मेहनत से काम करते रहेंगे; जी हां, कोई और भी अपने हाथ उठाएं।

और जब उस ओर वहां पर पुकारा जाता है, तो मैं वहां पर होऊंगा। (प्रभु आपको आशीष दे।)

जब पुकारा... (जब उस ओर वहां पर पुकारा जाता है, तो मैं वहां पर होऊंगा,)
जब उस ओर वहां पर पुकारा जाता है,
जब उस ओर वहां पर पुकारा जाता है,
जब उस ओर वहां पर पुकारा जाता है, तो मैं वहां पर होऊंगा।

57 प्रिय परमेश्वर, तूने यहां सभी के दिलों की जांच करी है, तथा तू इन लोगों के उद्देश्य और लक्ष्यों को जानता है। और मेरी प्रार्थना है कि तू इन पर करुणा कर। परमेश्वर, इस विनती को स्वीकार करके, इन लोगों पर तेरी करुणा उंडेली जाए। यह लोग आज सुबह इस क्षण तेरी आराधना करने आए हैं। वे यहाँ पर तेरा वचन सुनने को—को आए हैं।

58 और जैसा कि हमने कहा था, कि जब तू यहां था, तो तेरे सामान कोई और जीवन कभी भी नहीं हुआ। मरने में, कोई तेरे सामान नहीं हुआ जो इस तरह मौत से मिल सके। जब तूने दफन होकर, हमारे पापों को हमसे दूर किया है; लोगों के पापों को उठाकर, तूने उन्हें भूल जाने वाले सागर में डाल दिया है। मगर, फिर से जी उठकर, तूने हमेशा के लिए न्याय उचित और स्वतंत्र ठहरा दिया है। और आज हम तेरे आने की बाट जोह रहे हैं।

59 परमेश्वर, तू उन्हें आशीष दे। हमारी सहायता कर। हम मानते हैं कि अब और समय बाकी नहीं है, तेरा आना द्वार पर है। और कोई भी... और वैज्ञानिकों के अनुसार हो सकता है, अब से एक घंटे के समय में कभी भी यह देश नाश हो सकता है। और हम प्रार्थना करते है, कि हे परमेश्वर, आज इस ईस्टर की प्रातः हम तेरे आने की आशा पर टिके हैं, और कलीसिया इसी पर भरोसा किये है। बहुत से हजारों लोग धरती की मिट्टी में सोए पड़े उसी क्षण की प्रतीक्षा कर रहे हैं, और उनके प्राण तेरी वेदी के तले पुकार रहे हैं, "कब तक, प्रभु? कब तक? " मेरी प्रार्थना है, प्रभु, तू हमसे बातचीत कर। और होने दे हम सदैव हम यह बात याद रखें कि हम चाहे धरती पर कुछ भी करें, वह अर्थहीन हैं। बस हमें एक काम कर सकते हैं, कि तेरे आने की बात जोहते रहे, और सभी को तेरे आगमन के बारे में बताएं। तेरा सुसमाचार अत्यंत आवश्यक है। काश हम शीघ्रता से इसे लोगों तक पहुंचा सके, जिससे कि आप किसी भी समय आ सके। इससे पहले कि यह बम और ये मिसाइलें, जिनके बारे में लोग बताते हैं, कि यह सब बरस कर हजारों लाखों लोगों को एक मिनट में धरती पर विचार डालें; इससे पहले की ऐसा हो, प्रभु, तेरा वादा है कि तू अपने लोगों को ले जाने आएगा। प्रभु, ऐसा ही होगा। इसलिए किसी भी समय कलीसिया के लिए जी उठने, या ईस्टर के क्षण आ सकते हैं; उनके लिए पापी जीवन से जी उठकर मसीह के द्वारा, अनंत जीवन में प्रवेश करने के क्षण आने वाले हैं। हमारी प्रार्थना सुन।

60 और आज, जब हम अपनी अन्य सभाएं करते हैं, संडे स्कूल वगैरह में, तो प्रभु, तू हमसे फिर से बातें कर, ताकि आश्चर्यजनक रूप से बहुतों के हृदय में चेतावनी आए। और काश दर्जनों लोग आज सुबह इस जल कुंड में बप्तिस्मा लेने चले आये, आज इस ईस्टर की सुबह, प्रभु यीशु के संग गाड़े जाने में शामिल होकर, उसके बलिदान को ग्रहण कर सके। वे इसकी परवाह

ना करें कि किस नामधारी गिरजे, या धार्मिक समूह के सदस्य हैं जिनके साथ संगति करते है, यह सब अर्थहीन है। महत्वपूर्ण यह है कि क्या उन्होंने तेरे बलिदान को स्वीकार किया है? या नहीं क्या वे यह बात स्वीकार करते हैं कि वे भले नहीं है, केवल एक तू ही यीशु ही भला है? वह हमारे लिए मरा है, हमारे बदले मरा है। और उसने हमारे पापों को अपने ऊपर लेकर, उन्हें दफन कर दिया है, अब उसमें जीवित है। ना तो हमारे जीवन, ना ही यह नामधारी गिरजे हमारे पापी जीवन को दफन कर सकते हैं, केवल मसीह ने हमारे पापों को भूल जाने वाले सागर में दफन कर दिया है। परमेश्वर, होने दे कि यह सब तेरी दृष्टि में महिमा देने योग्य ठहरे।

61 और प्रभु, आज रात, काश आप आए और अपने जी उठने की सामर्थ से, सारे भवन को ऐसे हिला दें जैसे पहले कभी ना हुआ हो। काश अद्भुत चिन्ह और काम प्रकट किया जाए। प्रभु, जैसा कि आपने कुछ रविवार पहले किया था, वैसा ही फिर से करें, जब उस दिन बीमारों और दुर्बलों को अद्भुत रीति से चंगाई मिली थी। हमारी प्रार्थना है कि आज रात फिर से, तेरी महिमा के लिए वैसा ही होगा, प्रभु।

62 हमारी कमियों और कसूरों को हमें क्षमा कर, प्रभु, होने दे कि यह ईस्टर हम में से कुछ के लिए, वरन सभी के लिए वास्तविक बन जाए। और कुछ ऐसे लोगों के लिए जिन्होंने कभी ईस्टर की आशीषो को नहीं जाना, काश आज मसीह उनके दिलों में नई आशा, और नए जीवन सहित जी उठे। आप उन्हें कलवरी का पथ दिखाये। क्योंकि इस प्रार्थना को हम यीशु के नाम में मांगते हैं। आमीन।

63 [टेप पर खाली स्थान—सम्पा।]... इस समय की संगति के लिए। आप में से कितने लोग प्रभु से प्रेम करते हैं? अपने हाथ उठाएं। ओह, प्रभु, यह कैसा अद्भुत है!

64 भाई मैकडॉवेल मैंने सुना है आप बच्ची को समर्पित करना चाहते हैं। क्या आप संडे स्कूल सभा के लिए लौट कर आएंगे, क्या आप आ सकते हैं? ठीक है, यह अच्छा रहेगा। तब कोई ना कोई बच्चों को समर्पित भी करेगा, आप उस समय वापस आ जाए, कृपया बुरा ना माने, यह ठीक रहेगा ना।

65 और इसलिए अब, हम कुछ समय के लिए सभा को विसर्जित कर रहे हैं, ताकि आप अपने–अपने स्थानों पर जाकर नाश्ता कर ले, और फिर वापस आ सके। हमें ख़ुशी है कि आप उपस्थित रहे हैं।

66 अब आइये हम सब खड़े हो जाए। और वही गीत गाये कुछ समय पूर्व जिसकी बाबत मैं कह रहा था, "उस चमकदार बादलों सहित... " कितने लोगों के पास ऐसी आशा है? आइए देखें हाथ उठाकर बताइए। खड़े हो जाये।

... वह चमकदार और बादल रहित...

अब इसे गाये।

... जब मसीह में मरे हुए जी उठेंगे,
और उसके पुनरुत्थान की महिमा सहभागी होंगे;
जब धरती के बचाये हुए लोग दूसरी छोर पर एकत्र होंगे,
जब उस ओर वहां पर पुकारा जाता है, तो मैं वहां पर होऊंगा।

जब उस ओर वहां पर पुकारा जाता है,
जब उस ओर वहां पर पुकारा जाता है,
जब उस ओर वहां पर पुकारा जाता है,
जब उस ओर वहां पर पुकारा जाता है, तो मैं वहां पर होऊंगा।

67 अब, जब हम अगला पद गाते हैं:

आइए हम स्वामी के लिए परिश्रम करें, भोर से लेकर डूबते सूरज तक,
आइए हम बात करें, (संसार की चीजों के बारे में नहीं, लेकिन) आइए हम उसके सारे आश्चर्यकर्मों, प्रेम और ध्यान रखने के बारे में बात करें।

जब हम ऐसा कर रहे हैं, तो अपने पीछे खड़े किसी से हाथ मिलाये, आपके सामने, आपकी बगल में। आइये अब हम सब ऐसा करे। कहे, "सुप्रभात, मसीही मित्र, मैं आपके साथ कलीसिया में होने के लिए खुश हूं।" तो ठीक है।

आइए हम स्वामी के लिए परिश्रम करें...
... उसके सारे अद्भुत प्रेम और ध्यान रखने का;
फिर जब सारा जीवन समाप्त हो जाता है, और धरती पर का हमारा काम पूरा हो जाता है,
जब उस ओर वहां पर पुकारा जाता है, तो मैं वहां पर होऊंगा।

जब उस ओर वहां पर पुकारा जाता है,
जब पुकारा...
... उस ओर,
जब उस ओर वहां पर पुकारा जाता है, तो मैं वहां पर होऊंगा।

क्यों? हम वहां पर कैसे होंगे? क्योंकि:

जीते जी, उसने मुझसे प्रेम किया; मरते हुए, उसने मुझे बचा लिया;
दफन होकर, उसने मेरे पापों को दूर कर दिया;
जी उठ कर, उसने हमेशा के लिए धर्मी ठहराकर स्वतंत्र कर दिया;
किसी दिन वह आ रहा है—ओह, महिमामय दिन।

जब उस ओर वहां पर पुकारा जाता है, तो मैं वहां पर होऊंगा। (हमारे पास एक रसीद है।)

... पुकारा... उस ओर,
जब उस ओर वहां पर पुकारा जाता है,
जब उस ओर वहां पर पुकारा जाता है,
जब उस ओर वहां पर पुकारा जाता है, तो मैं वहां पर होऊंगा।

आइये हम अपने सिरों को झुकाये।

68 प्रभु, किसी उज्ज्वल और बादल रहित सुबह, जब हम उस बड़े मेघ धनुष को आकाश में आते हुए देखते हैं (जो परमेश्वर की वाचा का चिन्ह है, सनातन की वाचा: उसने अपनी प्रतिज्ञा को पूरा किया है।), तब हम उस ओर देखेंगे, आते हुए, और कब्र के पत्थर पीछे की ओर गिरेंगे, और वे जो धरती की मिट्टी में सोए हुए हैं, वे पहले ईस्टर की महिमा में भागीदार

होने के लिए जी उठेंगे उसके साथ, जिसने इसे संभव बनाया है, हमारा प्रभु। इसके लिए प्रभु, आपका धन्यवाद। मैं बहुत ही आनंदित हूं, प्रभु, यह आशा मेरे हृदय में है। क्योंकि मैं अपने कंधों को झुके हुए देखता हूं, प्रभु, और—और उम्र बढ़ने लगती है; मैं ऊपर पहाड़ी की चोटी पर हूं, अब उधर देख रहा हूं। प्रभु, मैं बहुत ही खुश हूं कि आशा मेरे अंदर जल रही है। किसी दिन आप आयेंगे। मैं बहुत ही खुश हूं कि आज यहां बहुत से हैं जो ऐसा ही महसूस करते हैं।

69 मैं प्रार्थना करता हूं, प्रभु, कि आप आज हमें एक महान दिन देंगे, हमें हमारे सारे अपराधों को क्षमा करते हुए, जैसा कि हम अपनी गलतियों को स्वीकार करते हैं, और स्वीकार करते हैं कि हम अयोग्य हैं। लेकिन मसीह की मृत्यु, गाडे जाना, पुनरुत्थान, उसकी आत्मा के द्वारा हमें साबित किया गया जो हमारे हृदय में जी उठा है, हमें उसके पुनरुत्थान का भागीदार बनाते हुए, और हमारे पास अब हमारे हृदयों में हमारे पुनरुत्थान का बयाना है। क्योंकि पाप से, हम मर गए हैं, और हमने एक नए जीवन में प्रवेश किया है, और संसार की पुरानी चीजों से जी उठे हैं, एक नए जीवन में। यह बयाना है, अग्रिम भुगतान, हे प्रभु, यह—यह हमारे पुनरुत्थान का बयाना है।

70 हम इसे महसूस करके बहुत खुश हैं और एक दूसरे पर इसका आनंद लेते हैं। इन चीजों को, हम अपने हृदय के महान खजाने के रूप में थामे हुए हैं, कुछ ऐसा जिसे कोई पैसा नहीं खरीद सकता है, संसार को मिटा नहीं सकता है, क्योंकि परमेश्वर ने इसे हमें मुफ्त में दिया है, जैसे कि मसीह इसके लिए मरा।

71 अब, हम प्रार्थना करते हैं कि आप आज सुबह हमारे साथ होंगे। अब, हमारी सहायता करें, और कुछ समय के लिए विश्राम करके, और वापस लौटे। हमें इसके बाद की एक महान सभा देना। क्योंकि हम इसे उसके नाम में मांगते हैं, जिसने हमें एक साथ प्रार्थना करना सिखाया:

हमारे पिता तू जो आसमान में हैं, तेरा नाम पवित्र माना जाये।
तेरा राज्य आए, तेरी इच्छा धरती पर पूरी हो जाए, जैसे स्वर्ग में पूरी होती है।
आज हमें हमारी प्रतिदिन की रोटी दे।
और हमारे अपराधों को क्षमा करें, जैसे हम उन लोगों

को क्षमा करते हैं जिन्होंने हमारे विरुद्ध अपराध किया है।

और हमें परीक्षा में ना डाल, परन्तु बुराई से बचा; क्योंकि राज्य, और सामर्थ, और महिमा हमेशा तेरे ही है। आमीन।

72 प्रभु आपको आशीष दे, अब, जब तक हम आपको फिर से नहीं मिलते, लगभग... साढ़े नौ बजे। आप एक दूसरे से हाथ मिलाये; और हम आपको साढ़े नौ बजे मिलेंगे।

जीना, मरना, दफ़न होना, जी उठना, आगमन HIN59-0329S

(Living, Dying, Buried, Rising, Coming)

ईस्टर सन्देश की श्रृंखला

यह सन्देश हमारे भाई विलियम मेरियन ब्रंहम के द्वारा मूल रूप से इंग्लिश में ईस्टर रविवार की सुबह सूर्योदय के समय, 29 मार्च, 1959 को ब्रंहम टेबरनेकल, जेफरसनविले, इंडियाना, संयुक्त राज्य अमेरिका में प्रचारित किया गया। जिसे चुम्बकीय टेप रिकॉर्डिंग से लिया गया है और इंग्लिश में विस्तृत छापा गया है। इस हिंदी अनुवाद को वोइस ऑफ गॉड रिकॉर्डिंग के द्वारा छापा गया और बांटा गया है।

HINDI

©2023 VGR, ALL RIGHTS RESERVED

VOICE OF GOD RECORDINGS, INDIA OFFICE
19 (NEW NO: 28) SHENOY ROAD, NUNGAMBAKKAM
CHENNAI 600 034, INDIA
044 28274560 • 044 28251791
india@vgroffice.org

VOICE OF GOD RECORDINGS
P.O. BOX 950, JEFFERSONVILLE, INDIANA 47131 U.S.A.
www.branham.org

कोपी राईट सूचना

सारे अधिकार सुरक्षित है। यह पुस्तक व्यक्तिगत प्रयोग या मुफ्त में देने और एक औजार के समान यीशु मसीह का सुसमाचार फैलाने के लिये
घर के प्रिंटर पर छाप सकते हैं।

इस पुस्तक को बेचना, अधिक मात्रा में फिर से छापना, वेब साईट पर डालना, दुबारा छापने के लिये सुरक्षित रखना, दूसरी भाषाओं में अनुवाद करना या धन प्राप्ति के लिये निवेदन करना निषेध है। जब तक की वायस ऑफ गोड रिकार्डिंग कि लिखित अनुमति प्राप्त ना कर ली जाये।

अधिक जानकारी या दूसरी उपलब्ध सामग्री के लिये कृपया संपर्क करें:

वायस ऑफ गोड रिकार्डिंग्स

पोस्ट बोक्स 950 जैफरसन विले, इन्डियाना 47131 यू. एस. ए.

www.branham.org